

② तद्धित प्रत्यय-

जब किसी संज्ञा/सर्वनाम/विशेषण के साथ प्रत्यय का प्रयोग किया जाए तो उसे बनने वाला यौगिक शब्द तद्धित प्रत्यय कहलाता है-

जैसे- सोना + आर = सुनार, जानी + आत् = जनिहास

अपना + त्व = अपनत्व, गरीब + ई = गरीबी

तद्धित प्रत्यय के छह भेद:-

- (i) → कर्तृवाचक तद्धित प्रत्यय
- (ii) → भाववाचक " "
- (iii) → सम्बन्धवाचक " "
- (iv) → अपत्यवाचक/सन्तानबोधक " "
- (v) → ऊनता/दीनता/पशुतावाचक " "
- (vi) → स्त्रीबोधक " "

(i) कर्तृवाचक लङ्गित प्रत्यय -

वे प्रत्यय जो किसी संज्ञा या सर्वनाम
 अथवा विशेषण के अन्त में जुड़कर कर्ता के अर्थ का बोध
 कराते हैं, कर्तृवाचक लङ्गित प्रत्यय कहलाते हैं -

जैसे- आर- लोहा + आर = लुहार, सोना + आर = सुनार.
 कुम्भ + आर = कुम्हार, गाँव + आर = गाँवार.

आरी- भीख + आरी = भिखारी, पूजा + आरी = पुजारी.

कार- कुम्भ + कार = कुम्भकार, स्वर्ण + कार = स्वर्णकार.

चर्म + कार = चर्मकार, शिल्प + कार = शिल्पकार.

पत्र + कार = पत्रकार, सलाह + कार = सलाहकार

एरा- घास + एरा = घैसेरा, लाख + एरा = लखेरा,

काम + एरा = कमेरा, सौंप + एरा = सैपेरा

ची - अफीम + ची = अफीमची, नकल + ची = नकलची,
 वावर + ची = वावरची, खजाना + ची = खजानवाची
 वान - गाडी + वान = गाडीवान, धन + वान = धनवान,

आरा - घास + आरा = घसियारा, लकडी + आरा = लकडारा
 इया - आदल + इया = आदलिया, भरतपुर + इया = भरतपुरिया
 दान - कूडा + दान = कूडादान, पीक + दान = पीकदान, फूट + दान = फूटदान
 कलम + दान = कलमदान, पान + दान = पानदान

(ii) भाववाचक लङ्घित प्रत्यय-

वे प्रत्यय जो किसी मंज्ञा या

सर्वनाम अथवा विशेषण के अन्त में जुड़कर भाव के अर्थ का बोध कराते हैं, भाववाचक लङ्घित प्रत्यय कहलाते हैं-

जैसे- ता- मानव+ता = मानवता, निज+ता = निजता,

मूर्ख+ता = मूर्खता, सुन्दर+ता = सुन्दरता, मधुर+ता = मधुरता,

मित्र+ता = मित्रता, शत्रु+ता = शत्रुता, दानव+ता = दानवता